क्या सही क्या गलत

मनरो लीफ

क्या सही
क्या गलत

मनरो लीफ

अरविन्द कुमार

FAIR PLAY by Munro Leaf
Originally published in USA

Copyright © 1939, Munro Leaf
Copyright © Renewed 1967, Munro Leaf

हिन्दी रूपान्तरण © 2008 अरविन्द कुमार पब्लिशर्स
सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला हिन्दी संस्करण : जनवरी 2008

प्रकाशक की अनुमति के बिना, इस पुस्तक के किसी भी अंश का,
किसी भी रूप से, पुनर्मुद्रण नहीं किया जा सकता।
अनुमति के लिए प्रकाशक को लिखें।

अरविन्द कुमार पब्लिशर्स
सी-1/324, पालम विला, पालम विहार
गुड़गांव 122017 द्वारा प्रकाशित।
www.arvindkumarpublishers.in

मुद्रक : विमल ऑफसैट, दिल्ली

ISBN-10: 81-8452-009-3
ISBN-13: 978-81-8452-009-5

मूल्य : 50 रुपये

यदि सारे भारत में

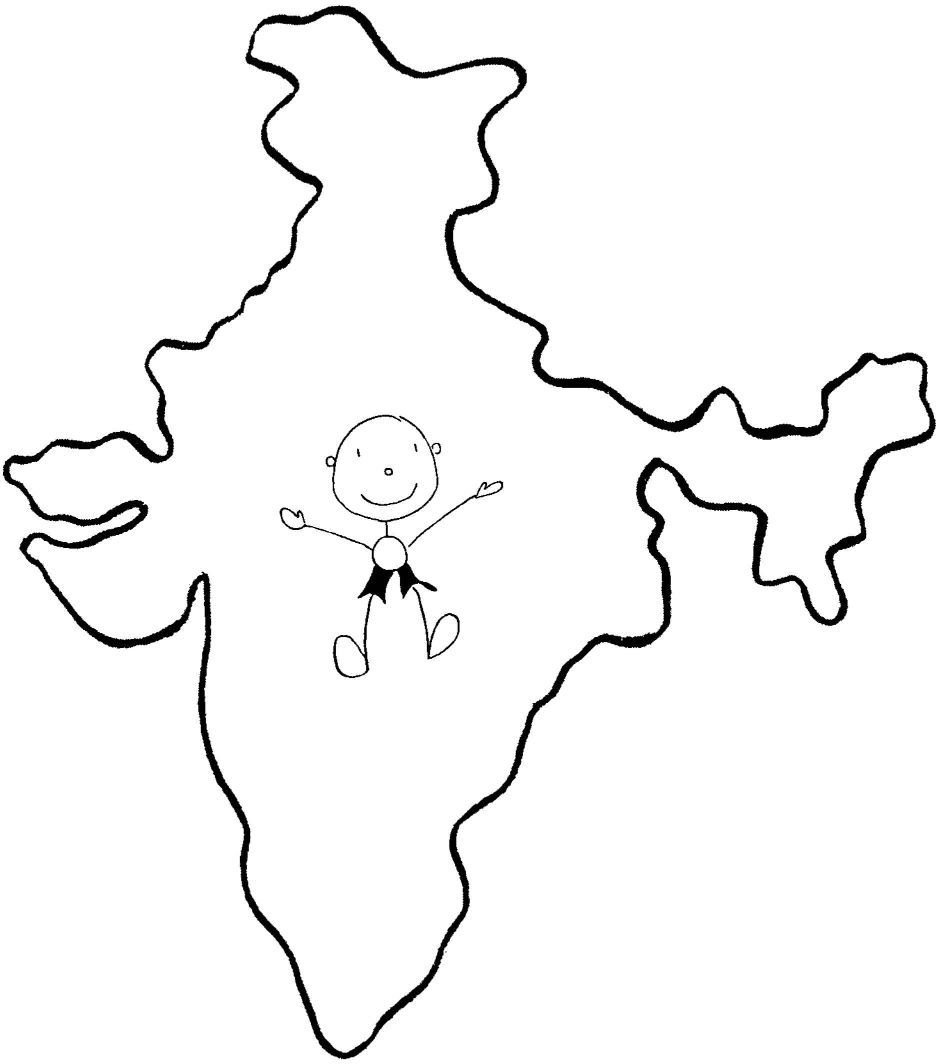

केवल एक ही आदमी होता,

और

वह आदमी होते

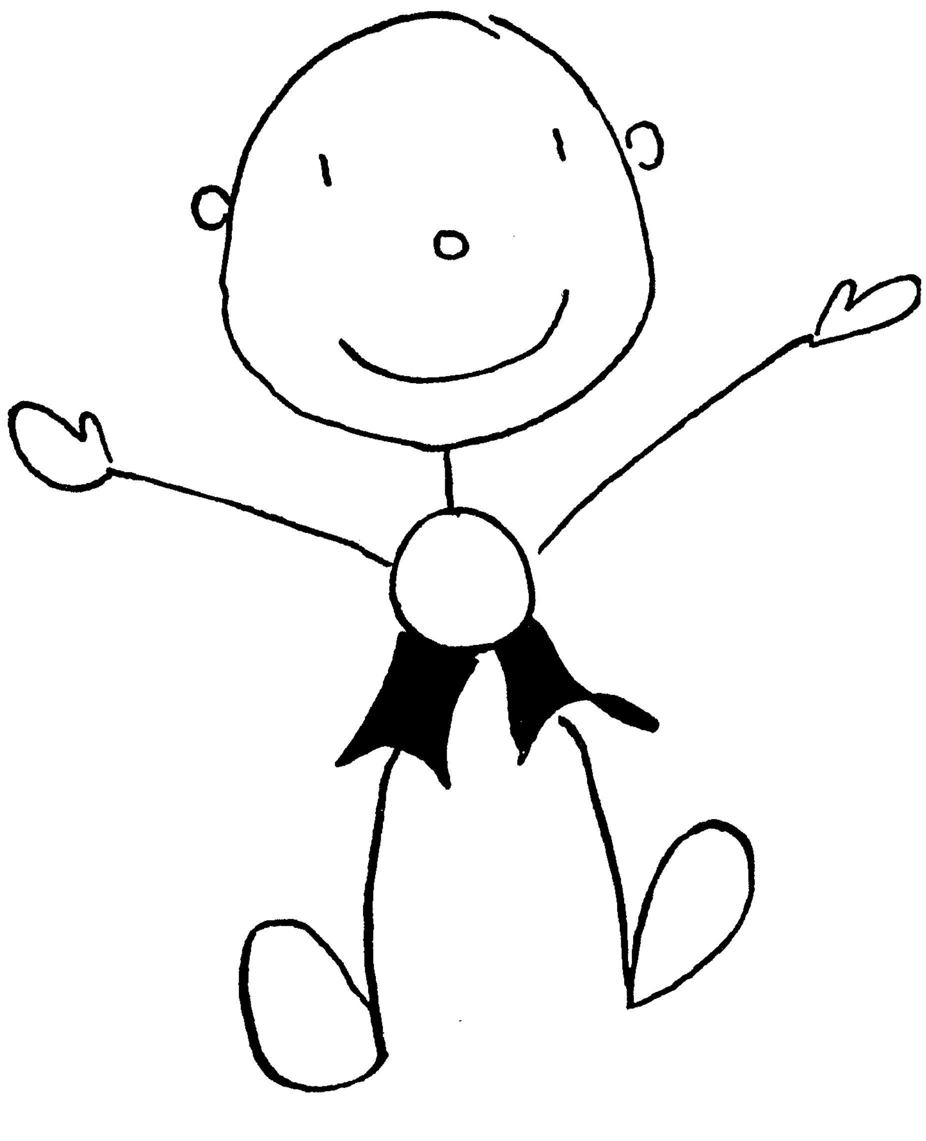

तुम

या

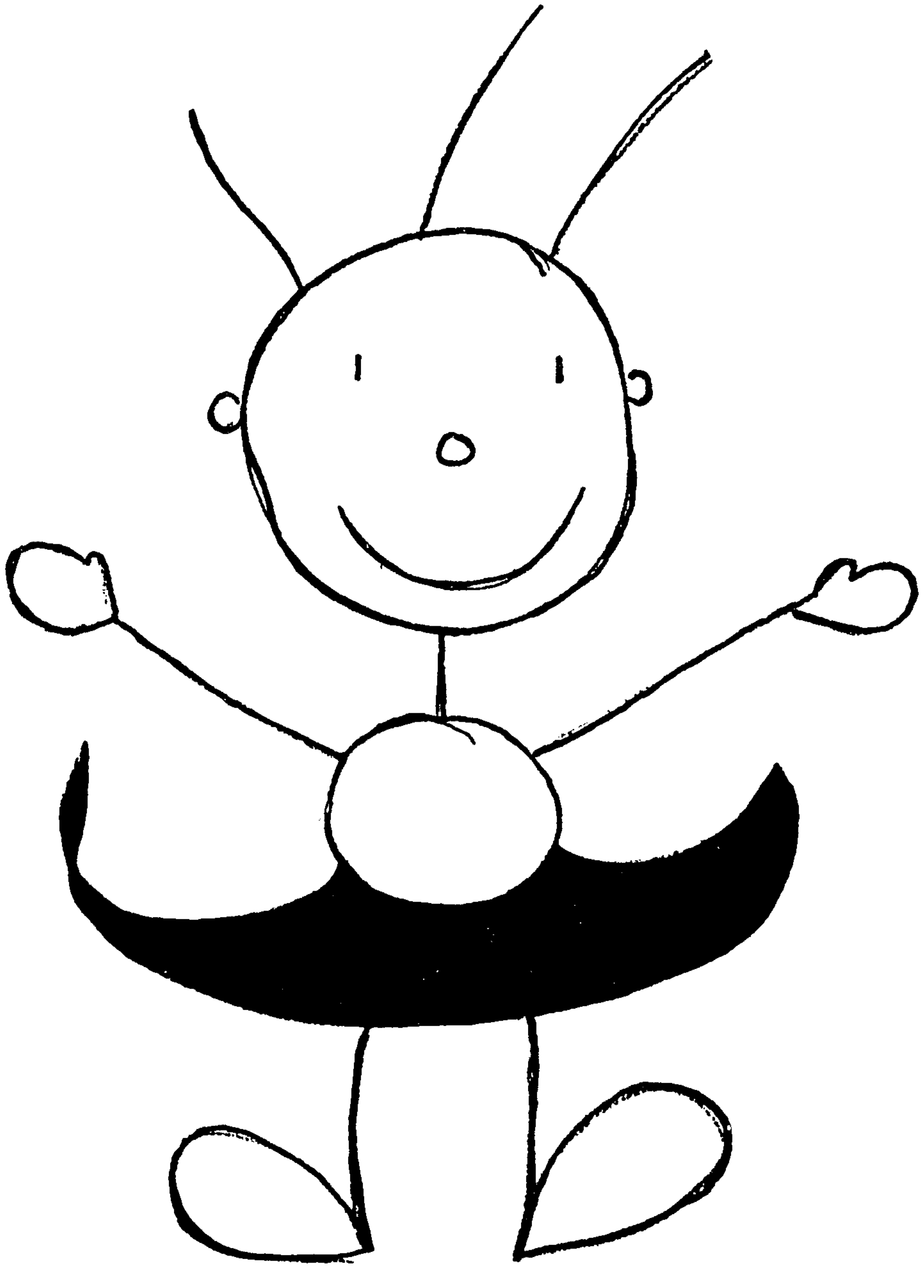

तुम

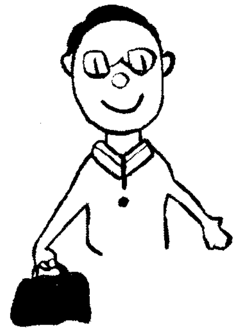

तो न होते

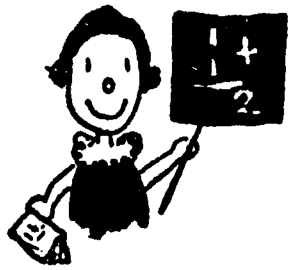

डॉक्टर

या

शिक्षक

आग बुझाने वाले

या

पुलिस वाले

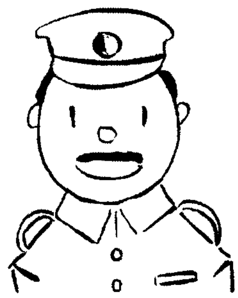

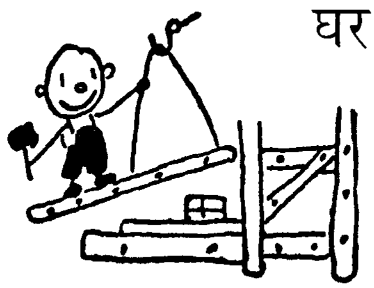

घर बनाने वाले

या

खानें खोदने वाले

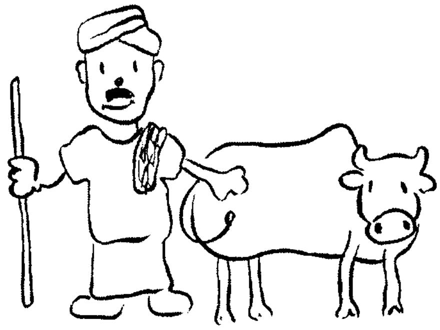

किसान

या

दरजी

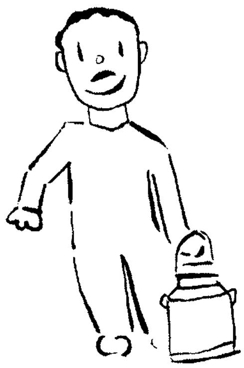

दूध बेचने वाले

या

फिल्म स्टार

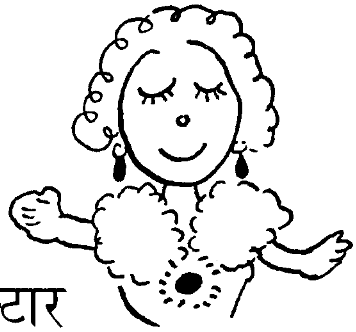

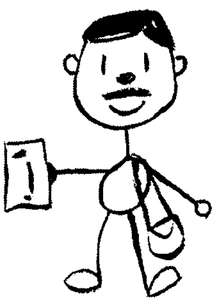

डाकिए

या

सैनिक

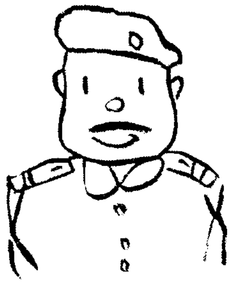

नर्सें

या

नेता।

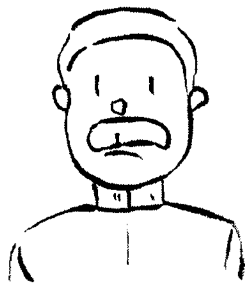

और फिर न होते

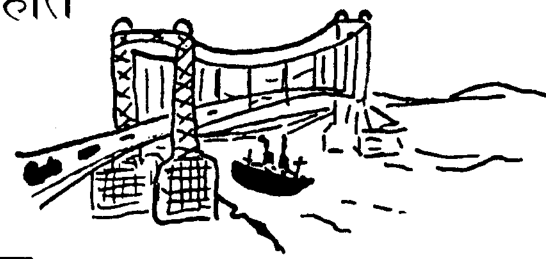

घर

या

पुल

सिनेमाघर

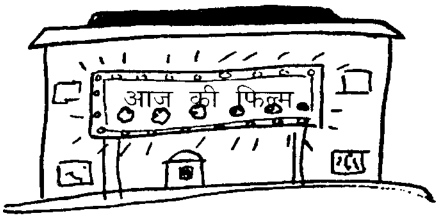

या

रेडियो

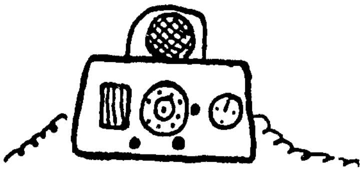

रेलगाड़ियाँ

या

पत्र

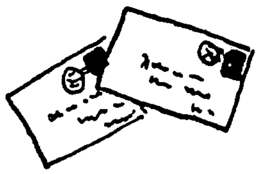

पार्क

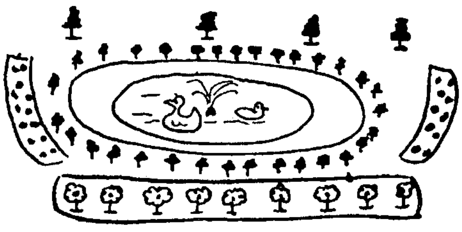

या

अखबार

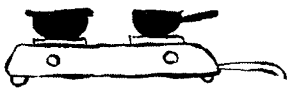

चूल्हे

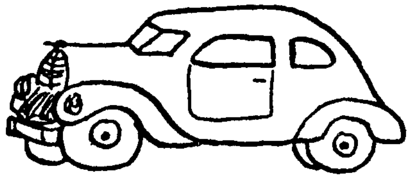

या

गाड़ियाँ

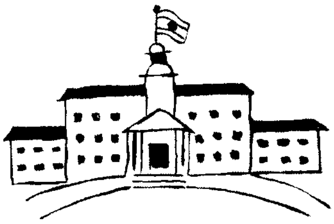

स्कूल

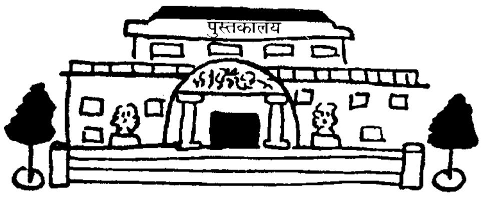

या

पुस्तकालय

दुकानें

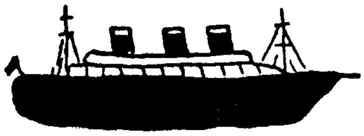

या

जहाज़

हवाई जहाज़

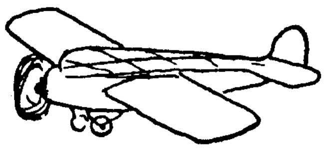

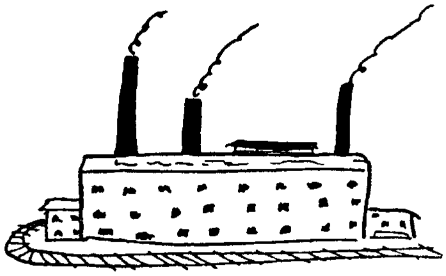

या

कारखाने

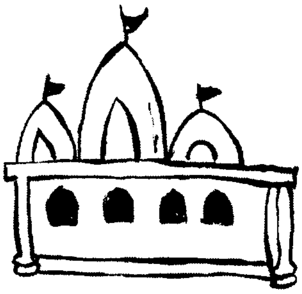

मन्दिर

या

अस्पताल।

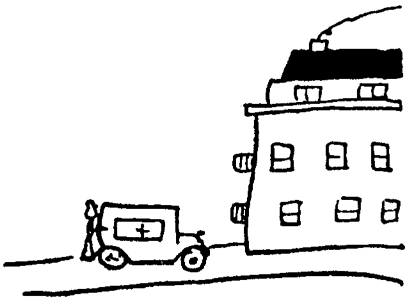

उस हालत में केवल होते

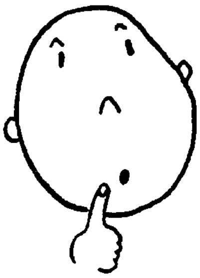

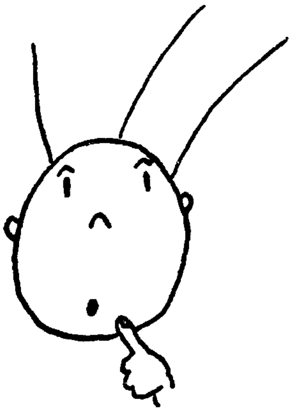

तुम या **तुम**

और बहुत से

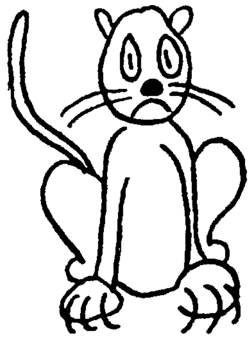

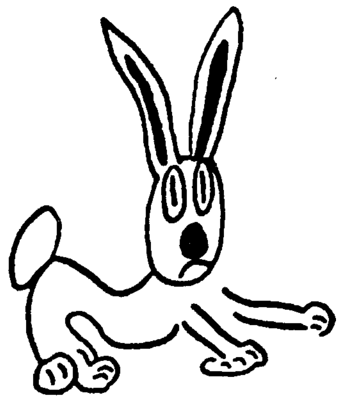

जंगली

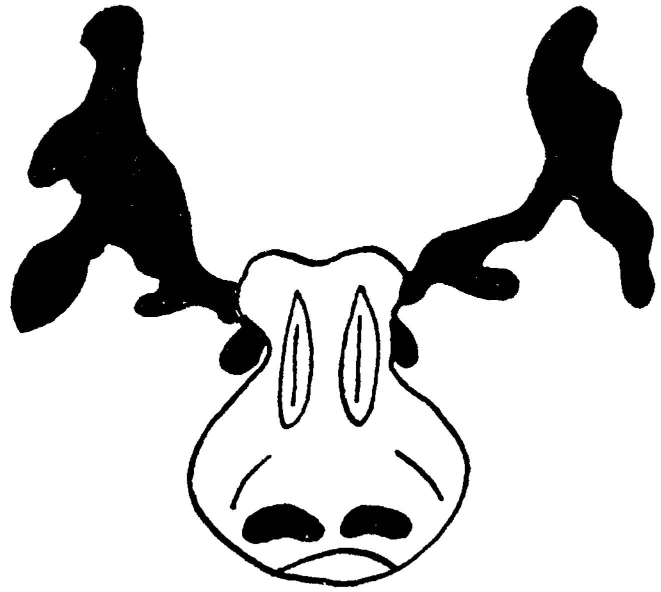

जानवर

और

मैं

सोचता

हूँ

यह

बात

तुमको

भी

अच्छी

नहीं

लगती।

परन्तु
सारे भारत में
तुम्हीं तो अकेले
आदमी **नहीं** हो।

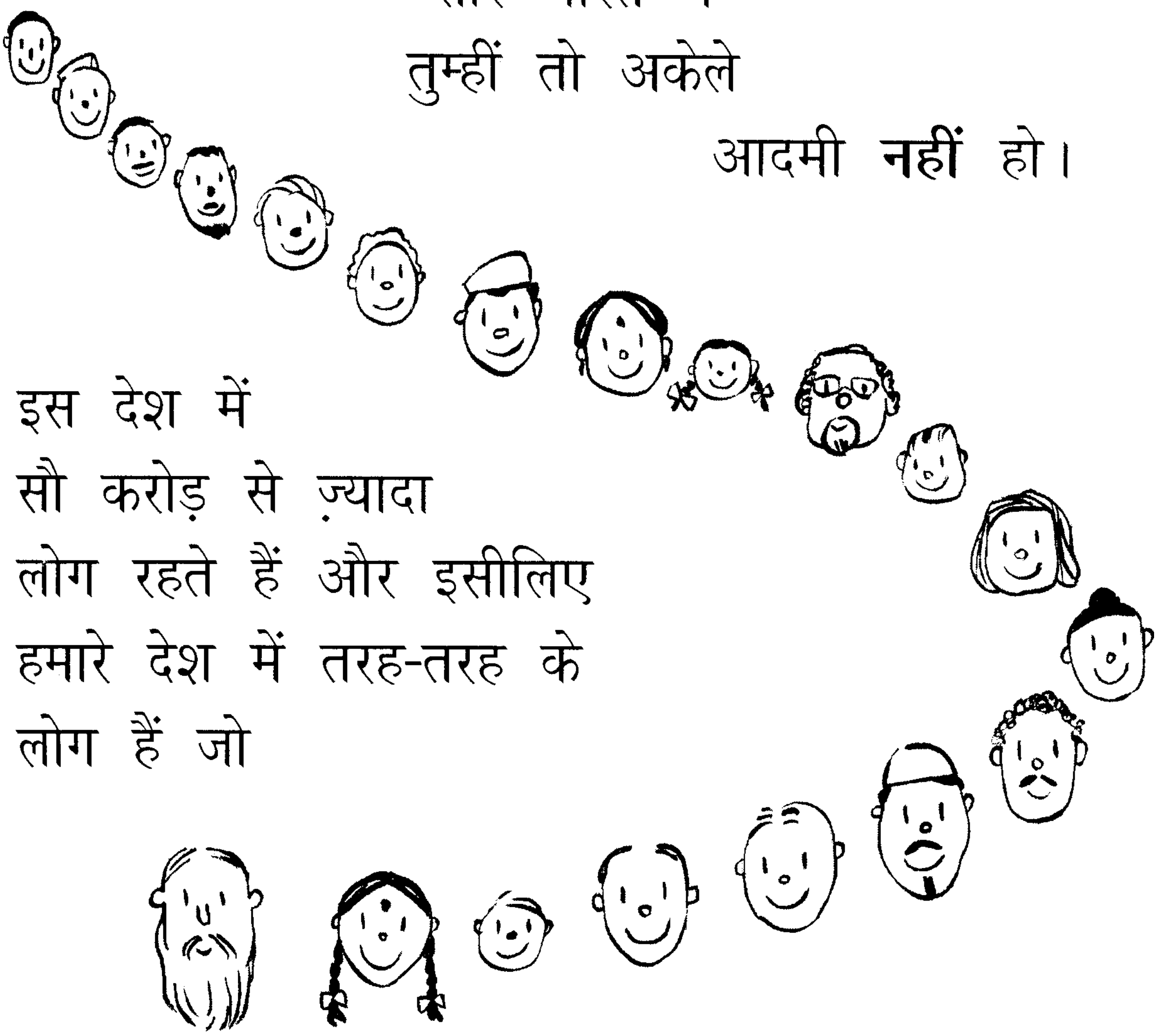

इस देश में
सौ करोड़ से ज़्यादा
लोग रहते हैं और इसीलिए
हमारे देश में तरह-तरह के
लोग हैं जो

साथ मिल-जुल कर रहने के लिए
कई प्रकार के काम करते हैं।

यदि हम दूसरे लोगों के साथ मिल-जुलकर खुशी से रहना चाहते हैं तो हम हर काम उस प्रकार नहीं कर सकते जैसा कि हम उस समय करते जब दुनिया में सिर्फ हम ही होते।

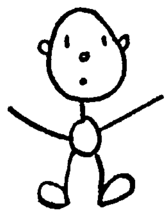

अगर सौ करोड़ से अधिक आदमी सब काम अपनी इच्छा के अनुसार करने लगें तो बड़ी गड़बड़ मच जाएगी और किसी का जीवन सुखी न रह पाएगा।

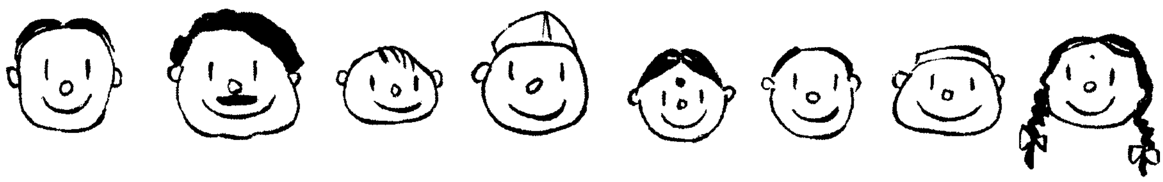

इसीलिए नियम बनाए जाते हैं,

इसीलिए कानून बनाए जाते हैं,

और इसीलिए सरकार बनती है।

और सबसे अच्छे नियम, कानून और सरकार वही हैं जिनकी आज्ञा का पालन करना हममें से अधिकतर लोग उचित समझें।

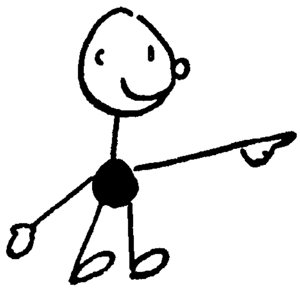

किसी देश का
काम-काज चलाने का
यही सबसे अच्छा
तरीका है।

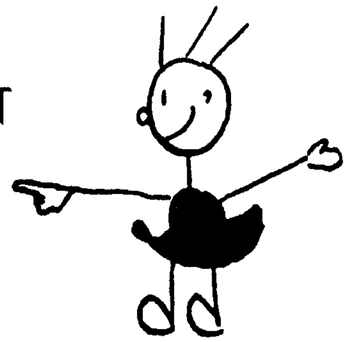

अगर दस बच्चे हैं

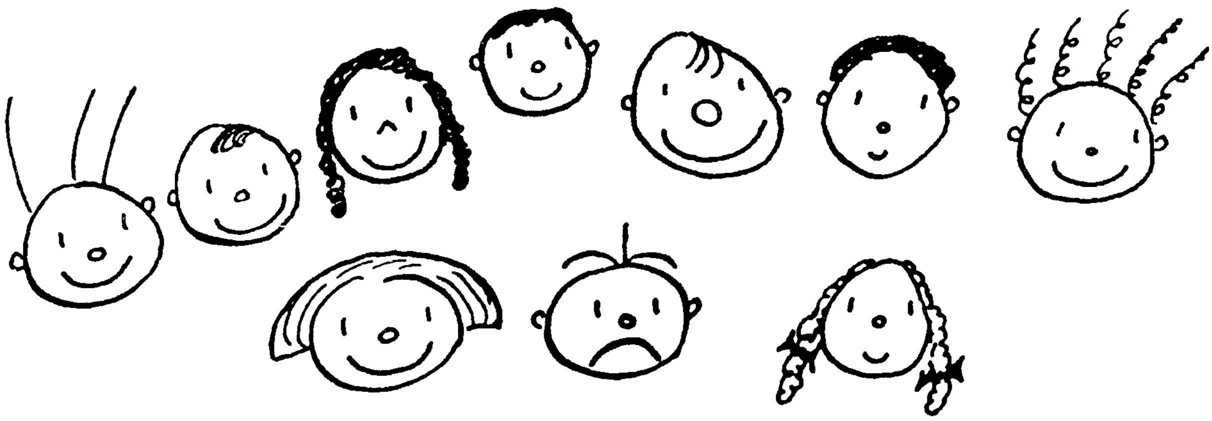

और वे सब साथ मिलकर

कहीं कोई खेल खेलना चाहते हैं

जिसके लिए वे जगह भी

ढूँढ लेते हैं

और

उनमें से नौ बच्चे वहाँ पर
क्रिकेट खेलना चाहते हैं

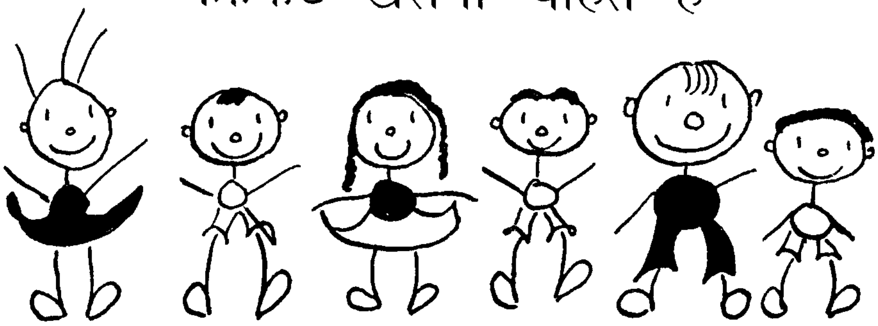

लेकिन उनमें से एक
जिसका नाम मैं-ही-मैं है

क्रिकेट नहीं खेलना चाहता।
वह वहाँ अकेला पतंग उड़ाना चाहता है।
तो इस हालत में सब क्या करें?

तो फिर

अगर वे समझदार हैं,

उनमें से नौ वहाँ

क्रिकेट खेलने लगेंगे

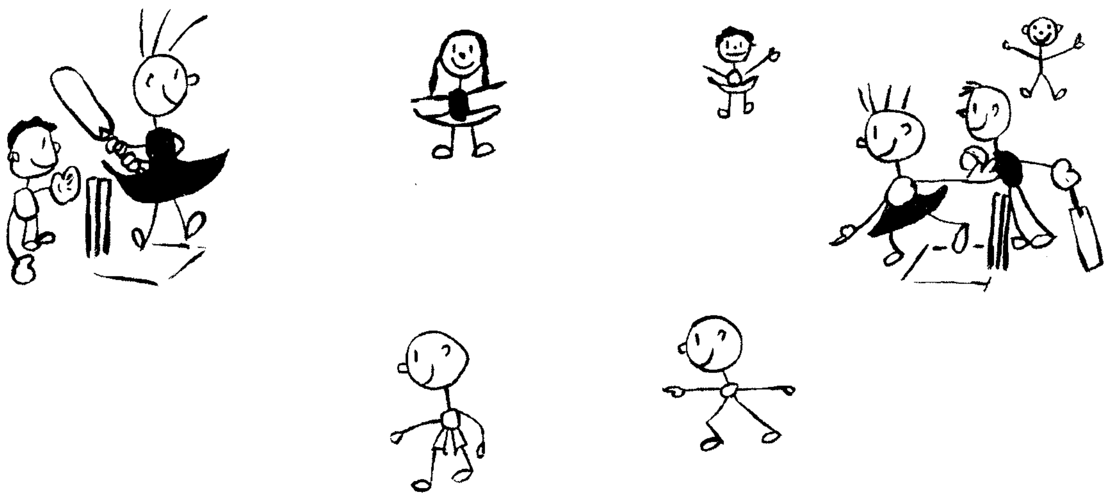

और मैं-ही-मैं को

अकेले

कहीं और जाकर

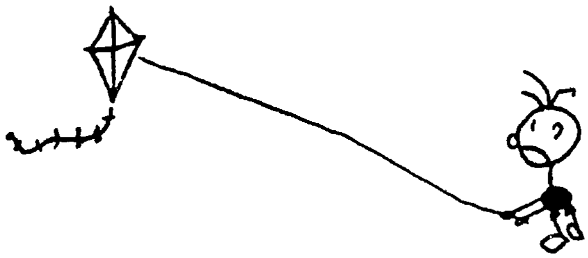

पतंग उड़ाना पड़ेगा।

वे यह तो नहीं कर सकते कि
एक लड़के के कारण अपना खेल
छोड़ दें और हाथ-पर-हाथ धरे,
उसको अकेले उसी जगह
पतंग उड़ाते देखते रहें।

अगर खेल खतम हो जाने के बाद उनको प्यास लगे और वे नल पर पानी पीने जाएँ तो पानी पीने के दो तरीके हो सकते हैं।

एक तरीका तो वह जिसे मैं-ही-मैं अपनाना चाहेगा –

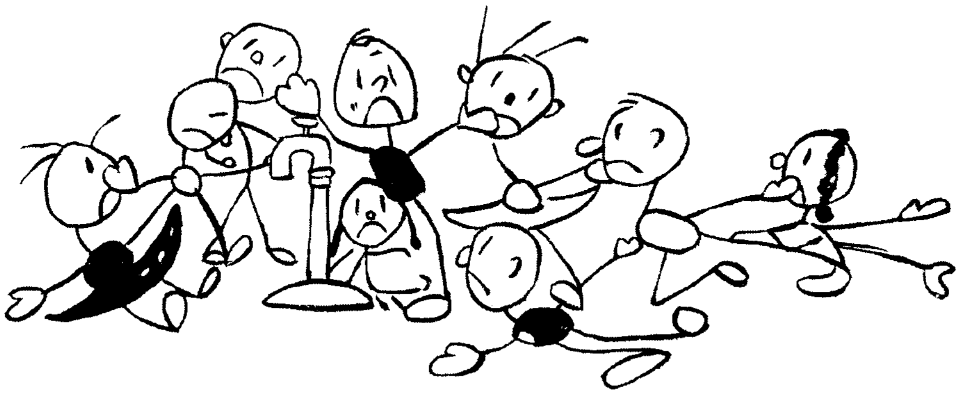

कि हर बच्चा एक-दूसरे को धकेलकर और गिराकर सबसे पहले खुद पानी पीने की कोशिश करे। ऐसा करने से बहुत देर तक किसी को भी पानी पीने का मौका न मिलेगा और हो सकता है कि किसी को चोट भी लग जाए।

वे ऐसा भी कर सकते हैं कि
तरीके से एक कतार बनाकर खड़े हो जाएँ
और बारी-बारी से पानी पी लें।

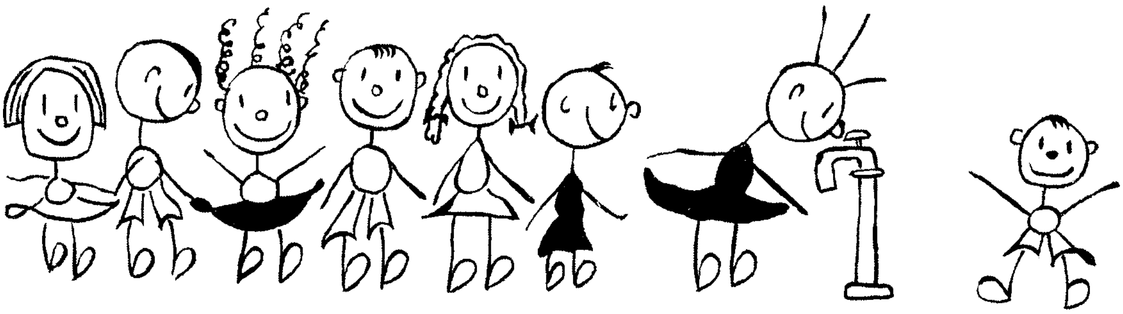

इस तरह सब बच्चे पानी भी
अच्छी तरह पी लेंगे और
देर भी उतनी नहीं लगेगी,
जितनी उस धक्का-मुक्की में लगती।
इससे किसी को चोट भी न लगेगी।

इसी तरह अगर वे कुछ पढ़ना चाहें
और पुस्तकालय में जाकर
एक-एक किताब हाथ में लेकर
शान्ति के साथ पढ़ने बैठ जाएँ

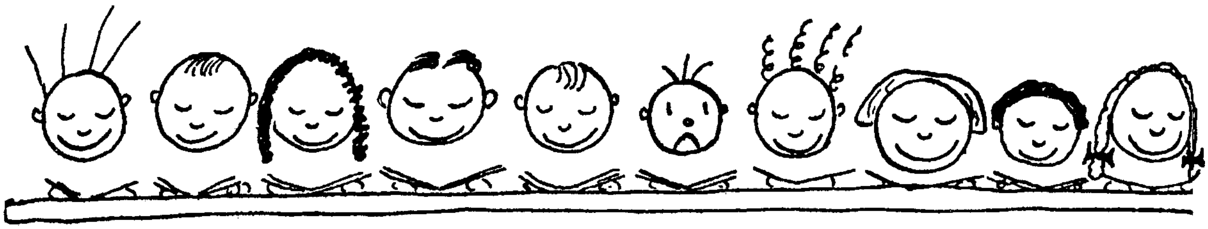

तो सब अपना समय
अच्छी तरह बिता सकते हैं,

लेकिन –

अगर मैं-ही-मैं के जी में यह आ जाए कि वह ज़ोर-ज़ोर से बातें करे और चिल्लाए तो फिर

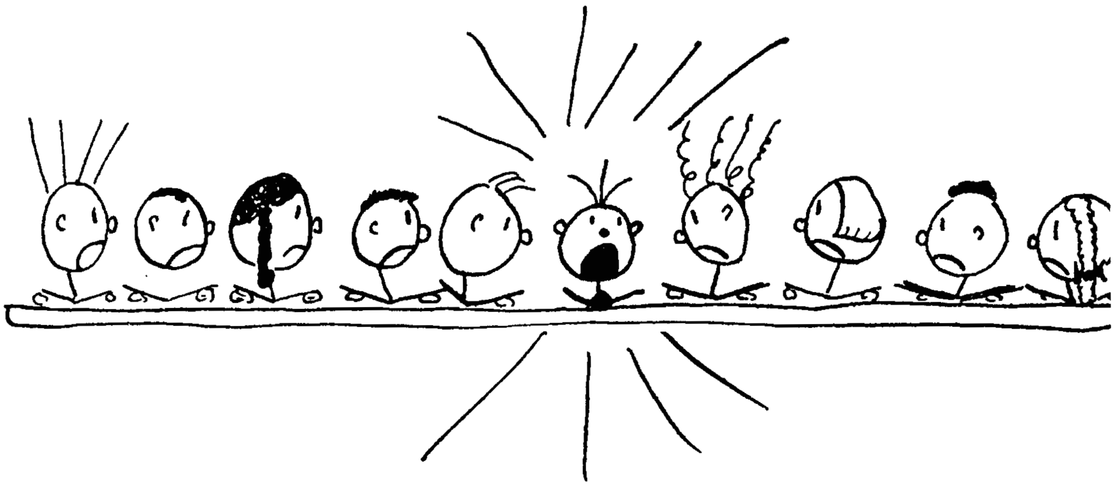

उनमें से कोई भी नहीं पढ़ पाएगा।

कोई आकर मैं-ही-मैं को लाइब्रेरी से बाहर निकाल देगा, ताकि दूसरे लोग पढ़ सकें और अपना मन बहला सकें।

पढ़ने के कमरे में न कोई बात कर सकता है, न चिल्ला सकता है। यह एक ऐसा नियम है जिससे लोग वहाँ अपना मनपसन्द काम – पढ़ना – आसानी से कर सकते हैं।

ये नियम इसलिए बनाए जाते हैं कि अधिक-से-अधिक लोग अपना मन बहला सकें और हँसी-खुशी जीवन बिता सकें।

हमें ऐसे लोगों से बचाने के लिए भी, जो अपने अलावा किसी और की परवाह ही नहीं करते, बहुत से नियम बनाए जाते हैं।

इन नियमों को कानून कहते हैं।

मान लो, तुम्हारे पास एक साइकिल है

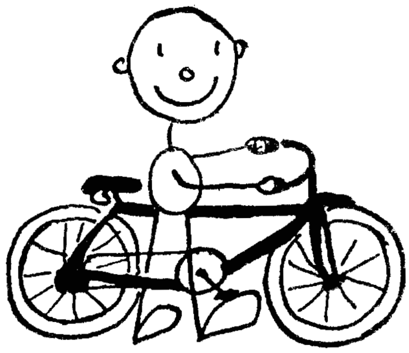

और तुम साइकिल पर बैठकर कहीं जाने को तैयार होते हो। इतने में मैं-ही-मैं प्रकार का कोई आदमी, जो तुमसे बहुत बड़ा और बलवान है,

आता है और

तुमसे कहता है,

"मुझे यह साइकिल

दे दो।"

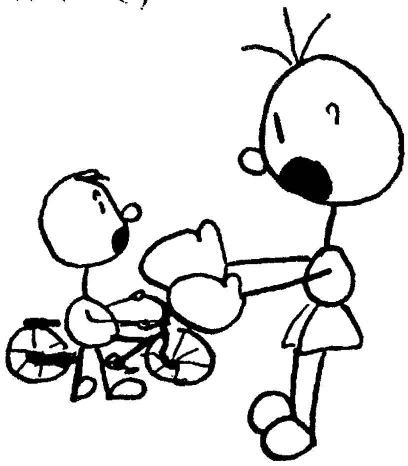

तुम अकेले उसे
साइकिल छीनने से
रोक नहीं सकते।
लेकिन तुम अकेले नहीं हो।

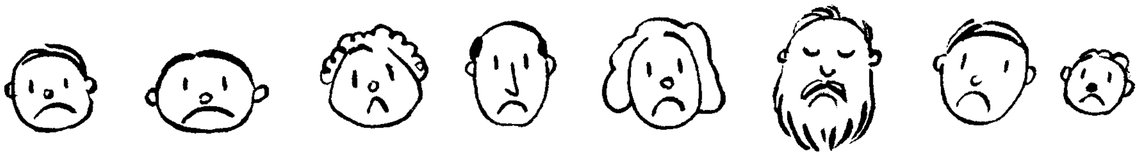

हमारे देश के बहुत से लोगों ने मिलकर, यह फैसला किया है कि जिस चीज़ के हम मालिक हैं, वह हमारी है और वह चीज़ हमसे कोई छीन नहीं सकता, चाहे वह हमसे कितना ही बलवान क्यों न हो।

और बहुत से लोग मिलकर, मैं-ही-मैं प्रकार के किसी भी आदमी को – वह चाहे कितना ही बलवान क्यों न हो – यह बता सकते हैं कि वह

तुम्हारी साइकिल नहीं ले सकता, क्योंकि उस साइकिल का मालिक वह नहीं है। वह साइकिल तुम्हारी है। यही कानून है।

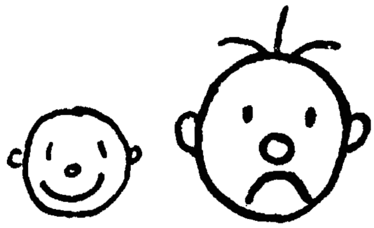

जो चीज़ तुम्हारी है, वह तुमसे कोई छीन नहीं सकता।

लेकिन मैं-ही-मैं प्रकार के लोगों पर नज़र रखने के लिए, और उनको ऐसा काम करने से रोकने के लिए, जो उन्हें नहीं करना चाहिए, हर आदमी को बहुत समय देना पड़ता और काफ़ी काम करना पड़ता।

इसी काम को करने के लिए हमारे पुलिस वाले हैं।

हमारे पुलिस वाले वे लोग हैं जो इस बात की देख-रेख करते हैं कि सब लोग उन नियमों और कानूनों का पालन करें जो हम लोगों में से

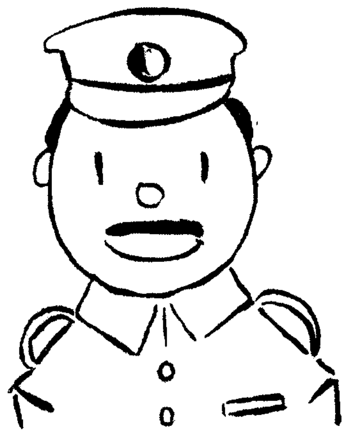

अधिकतर की राय में ऐसे नियम और कानून हैं, जिनका सबको पालन करना चाहिए।

पुलिस वाला लोगों से यह नहीं कहता कि **उसकी** राय में उनको क्या करना चाहिए।

पुलिस वाले का काम यह है कि वह यह देखे कि कोई आदमी अपने मतलब के लिए ऐसा काम न करने पाए जिसके बारे में हममें से अधिकतर लोगों ने यह फैसला किया है कि वह काम गलत है और उससे किसी दूसरे आदमी को

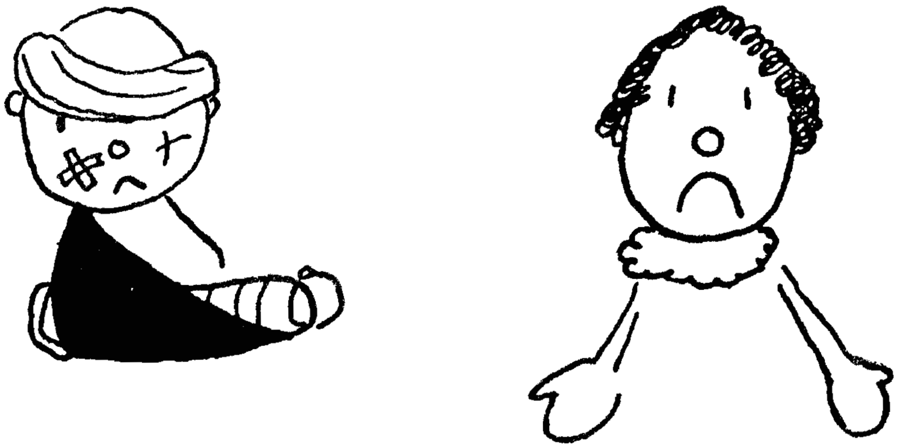

दुख पहुँच सकता है, या किसी को तकलीफ हो सकती है।

पुलिस वाले उस तरह के
स्वार्थी लोगों पर भी
कड़ी नज़र रखते हैं
जो मैं-ही-मैं जैसे होते हैं
और जो गाड़ी इतनी तेज़ी से
और इतनी लापरवाही से चलाते हैं कि
सड़क पर चलने वालों को

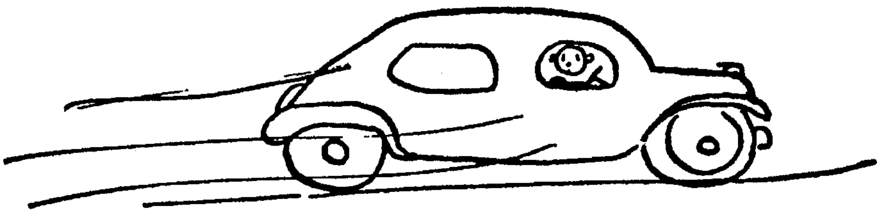

चोट लगने का
या गाड़ियों की टक्कर का
खतरा रहता है।

लोगों ने मिलकर यह फैसला किया है कि
गाड़ियाँ एक विशेष रफ्तार से तेज़ न चलाई जाएँ
और उन्होंने यह भी तय किया है कि
गाड़ी चलाने वाले लाल बत्ती पर रुकें

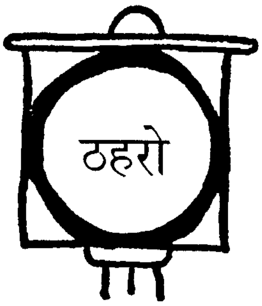

और सड़क पर चलने के
अन्य नियमों का पालन करें।
इसीलिए गाड़ी चलाने के भी
कुछ नियम बनाए गए हैं
ताकि किसी को सड़क पर चोट न पहुँचे।

कुछ स्वार्थी लोग ऐसे होते हैं जो इन नियमों पर कोई ध्यान नहीं देते। वे गाड़ी बहुत तेज़ चलाते हैं और सड़क पर चलने के नियमों का

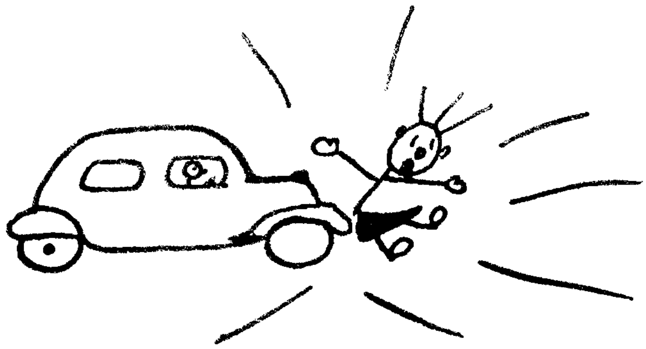

पालन नहीं करते। ऐसे लोगों से यह डर रहता है कि वे किसी भी वक्त हमें घायल कर देंगे या मार डालेंगे। इस ढंग से मोटर चलाना कानून के खिलाफ है और इसीलिए हम पुलिस वालों को रखते हैं कि वे लोगों को गाड़ी इस ढंग से चलाने से रोकें।

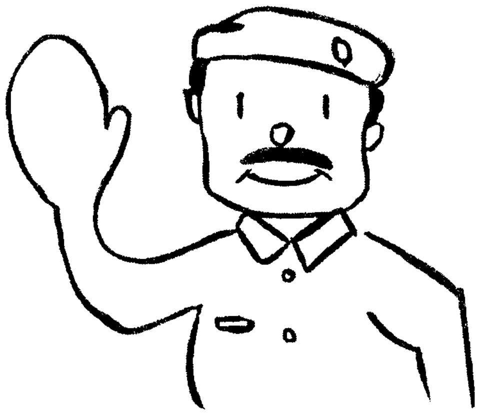

मान लो किसी के पास एक घर है और

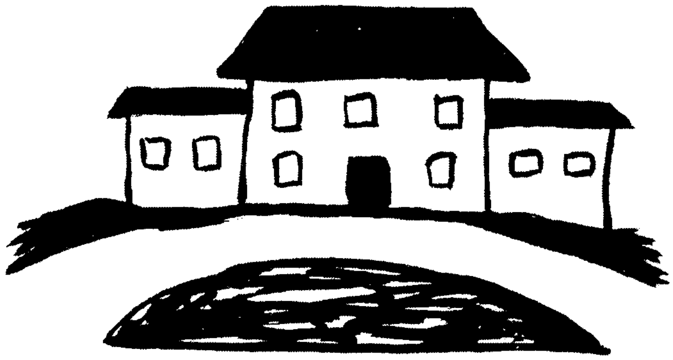

वह उसमें रहता है। उसे पूरा अधिकार है कि जब तक वह खुद न चाहे, वह किसी को अपने घर में घुसने न दे।

यह नहीं हो सकता कि जिसका जहाँ जी चाहे, बिना पूछे घुसता चला जाए।

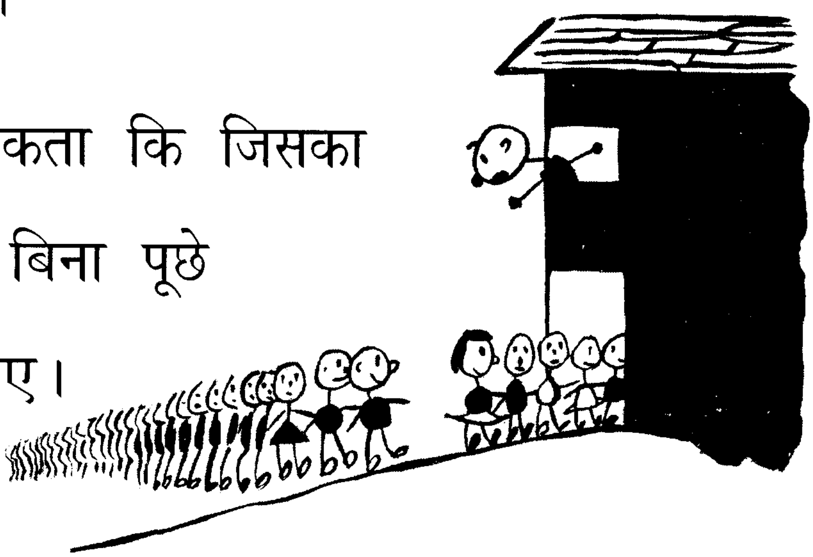

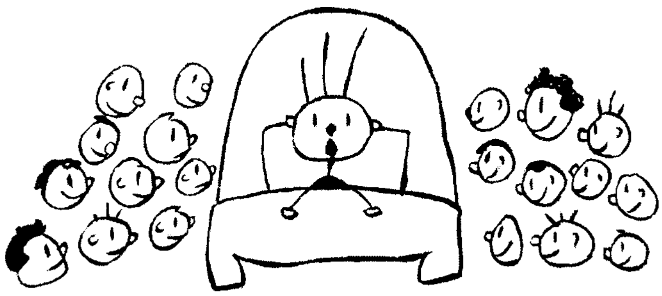

सोचो कि तुम अपने कमरे में रात के वक्त आराम से सो रहे हो और जिसका जी चाहे, वह वहाँ घुसा चला आए। ऐसी दशा में तुम्हारा सोना कठिन हो जाएगा।

इसलिए यह कानून बनाया गया है कि कोई आदमी किसी के घर में तब तक नहीं घुस सकता जब तक वहाँ रहने वाले की इच्छा न हो।

जिन कानूनों के बारे में हमने ऊपर पढ़ा है उनके अलावा और भी बहुत से कानून हैं, लेकिन इतनी बात तो अब तक तुम्हारी समझ में आ गई होगी कि हमारे नियम और कानून क्यों बनाए जाते हैं।

नियम और कानून इसलिए बनाए जाते हैं कि सब लोग आराम से रह सकें और कोई

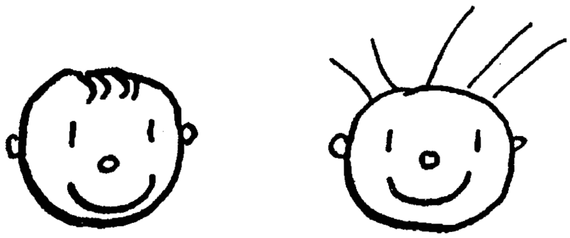

स्वार्थी आदमी बाकी लोगों को दुख न दे सके, या चोट न पहुँचा सके।

अब हमें यह देखना है कि ये कानून कौन बनाता है और भारत में रहने वाले सौ करोड़ से अधिक लोग इस बात का फैसला किस प्रकार करते हैं कि वे मिल-जुलकर जीवन किस तरह बिताएँगे।

इसे **सरकार** कहते हैं।

तुम चाहे आदमी हो या औरत, जब तुम अठारह

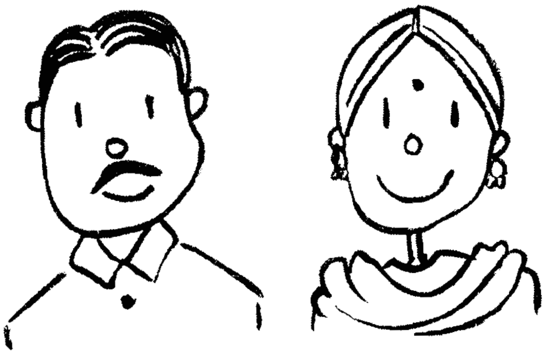

बरस के हो जाते हो, तब तुम्हें देश के दूसरे लोगों की तरह, कानून बनाने में सहायता करने का अधिकार मिल जाता है, जिसके द्वारा देश का शासन चलाया जाता है।

यदि हम बुद्धिमान और स्वार्थहीन हैं और इस काम के प्रति आलसी नहीं हैं, तो हम सही नेता चुनकर सही कानून बनाने में मदद कर सकते हैं।

अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद हम सब कोई न कोई काम करने लगते हैं ताकि अपने खाने के लिए और कपड़ों के लिए और

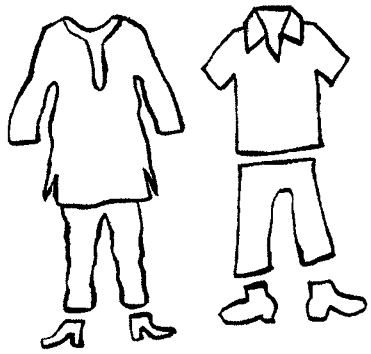

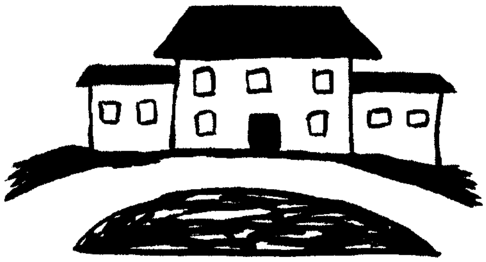

घर के लिए पैसे कमा सकें। लोग पैसे कमाने के लिए तरह-तरह के काम करते हैं, लेकिन वे चाहे जो काम भी करते हों, जब तक वे कोई गड़बड़ नहीं करते और जेल से बाहर रहते हैं, उनको इस बात का अधिकार होता है कि वे देश के शासन में हाथ बटाएँ और यह काम वे इस प्रकार करते हैं।

वे वोट देते हैं।

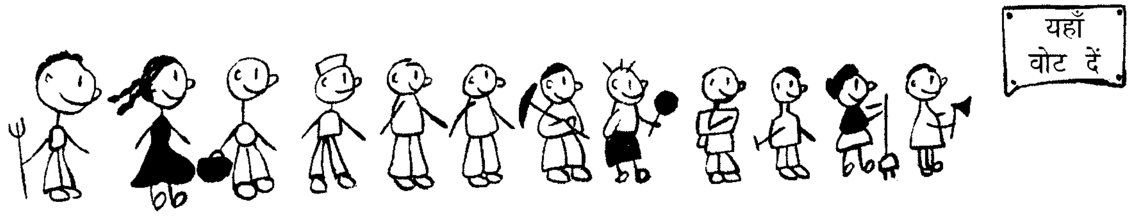

किसान और शिक्षक, डॉक्टर और नर्स, व्यापारी, दुकानदार, मज़दूर, रसोइया, वकील, पुलिस वाला, चौकीदार और आग बुझाने वाला – सबको वोट देने का अधिकार होता है।

इसका मतलब यह है कि सबको यह राय देने का अधिकार होता है कि वे क्या चाहते हैं।

और जिस बात को ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग पसन्द करते हैं, वही सबको माननी पड़ती है।

यही सबसे उचित बात है।

देश के शासन में हाथ बटाने के लिए

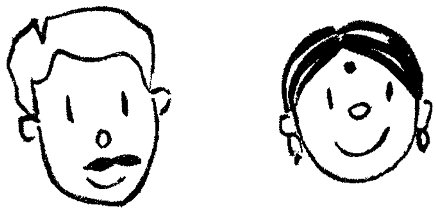

हम वोट देकर कुछ व्यक्तियों को अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजते हैं।

हमारे देश में हर पाँच साल बाद सब लोगों की राय ली जाती है कि वे किन लोगों को लोक सभा और विधान परिषद के लिए अपना प्रतिनिधि बनाना चाहते हैं। इस प्रकार चुने गए लोगों का यह काम होता है कि वे शासन का काम उस ढंग से चलाएँ जैसे कि अधिकतर लोग चाहते हों।

ये प्रतिनिधि अपनी इच्छा से लोगों के लिए नियम और कानून भी बना सकते हैं, इसलिए समझदारी इसी में है कि ऐसे अच्छे, बुद्धिमान और ईमानदार लोगों को प्रतिनिधि चुना जाए जो शासन का काम अच्छी तरह चला सकें।

जब प्रतिनिधि चुनने का दिन आए तो हर उस व्यक्ति को, जो अठारह बरस का या इससे ज़्यादा उम्र का है, मतदान केन्द्र अर्थात वोट देने की जगह पर जाकर उन व्यक्तियों को वोट देना चाहिए जिनके बारे में वह समझता हो कि वे सबसे अच्छे हैं।

जब सब लोग वोट देकर अपनी राय दे चुकते हैं, तब सारे वोट गिन लिए जाते हैं और जिन व्यक्तियों को सबसे ज़्यादा लोग पसन्द करते हैं, वही उस जगह के प्रतिनिधि चुन लिए जाते हैं।

उस समय हम कहते हैं कि वे आदमी और औरतें चुने गए, और वोट देने के इस ढंग को चुनाव कहा जाता है।

इसी प्रकार हम और बहुत से आदमियों और औरतों का चुनाव भी करते हैं जो नगरपालिकाओं और ज़िला परिषदों में हमारे प्रतिनिधि होते हैं और ये सब लोग हमारे लिये ऐसे कानून बनाते हैं जिनके बारे में हम सब लोग अलग-अलग वोट देकर फैसला नहीं करते।

लेकिन हम यह फैसला ज़रूर करते हैं कि कौन लोग हमारे लिए ये कानून बनाएँगे। इसीलिए जब हम वोट देने जाएँ तो हमको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम अच्छे आदमियों और अच्छी औरतों को ही अपना प्रतिनिधि चुनें।

बड़े हो जाने पर यदि हम आलस के कारण वोट देने न जाएँ तो इससे बुरी और कोई बात नहीं हो सकती।

क्योंकि अगर हम न बताएँ कि हम कौन से कानून चाहते हैं या कौन लोग हमारे लिए कानून बनाएँ और फिर हमारी पसन्द के कानून न बनें या हमारी पसन्द के प्रतिनिधि न चुने जाएँ तो हमें इस बात पर नाराज़ होने का कोई अधिकार नहीं रह जाता।

इसलिए कानून बनाने वाले लोगों को चुनने में हमें पूरी सहायता देनी चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश का शासन दुनिया के तमाम देशों के शासन से अच्छा हो तो हमको एक ज़रूरी बात हमेशा याद रखनी होगी। वह यह कि यदि अधिकतर लोग उस कानून को या उस आदमी को पसन्द नहीं करते जिसे हम पसन्द करते हैं तो हमें ईमानदारी से कानूनों का पालन करना चाहिए और उन लोगों की सहायता करनी चाहिए जिनको सबसे ज़्यादा वोट मिले हैं।

यही है
सही तरीक़ा!

क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि
बड़े होकर हम सब एक-दूसरे के लिए
काम करते हैं?

हमारे देश में बहुत से बच्चे
बड़े होने से पहले ही
किसी दूसरों के लिए काम करने लगते हैं।
क्या तुम इस समय
किसी के लिए काम करते हो?

क्या तुम कभी घर में
बरतन साफ करते हो,

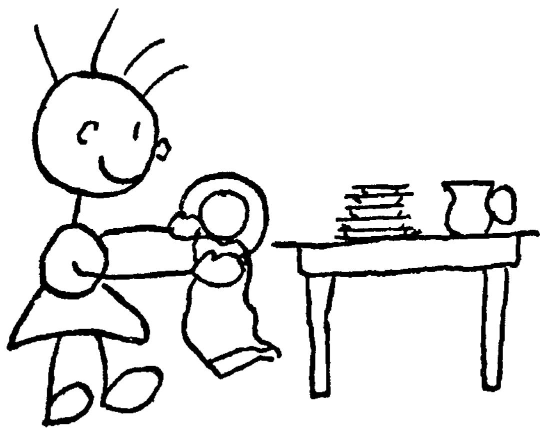

या खाना परोसते हो,

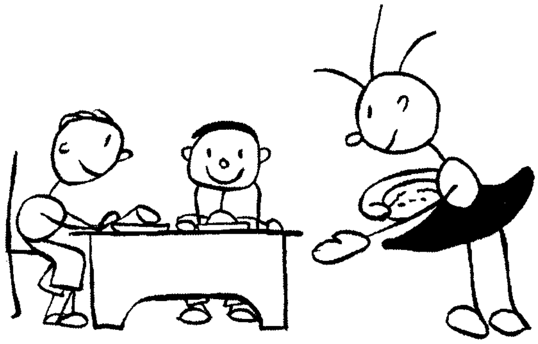

या

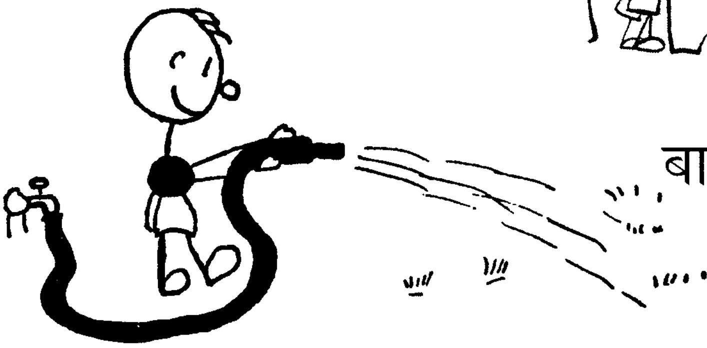

बाग में पानी देते हो,

या

मुर्गियों को दाना देते हो,

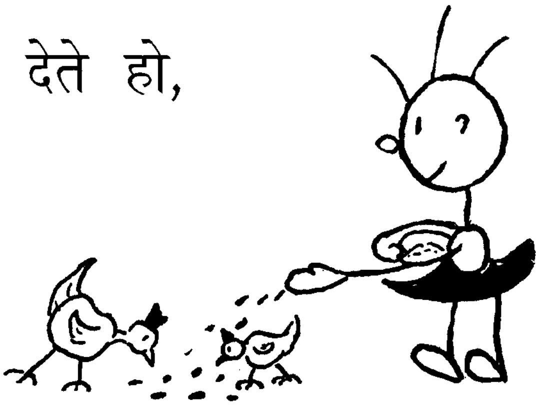

या

बाज़ार से सामान लाते हो?

बस, यह सब ही काम हैं।

हम सब लोग एक-जैसा काम नहीं करते।

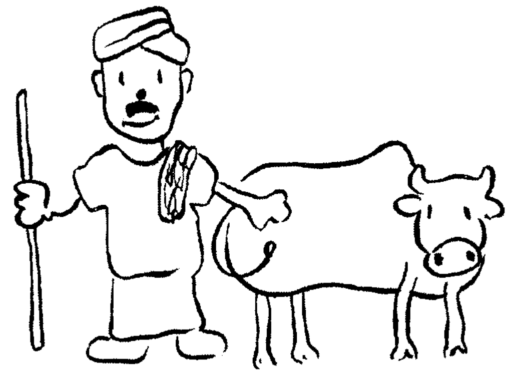

किसान जो पशु पालते हैं या जो सब्ज़ियाँ उगाते हैं, वे सब केवल अपने लिए नहीं, और

मोची जितने जूते बनाते हैं, सब अपने लिए नहीं बनाते,

और

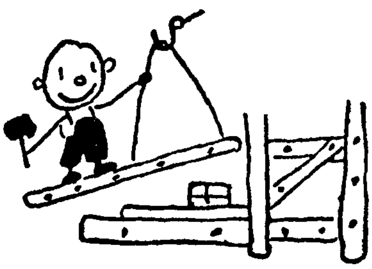

मकान बनाने वाले केवल अपने लिए मकान नहीं बनाते,

और

डॉक्टर केवल अपना ही इलाज तो नहीं करते।

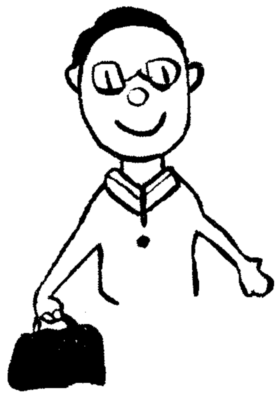

मान लो, तुम अपने किसी दोस्त को अपने यहाँ बुलाना चाहते हो और वह एक हज़ार किलोमीटर दूर रहता है।

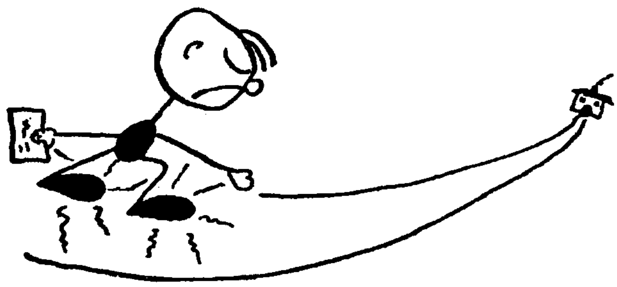

तो तुम उसे
कैसे बुलाओगे?

एक तरीका तो यह है कि तुम हज़ार किलोमीटर चलकर जाओ। लेकिन एक इससे भी आसान तरीका है। तुम उसे पत्र भेज सकते हो।

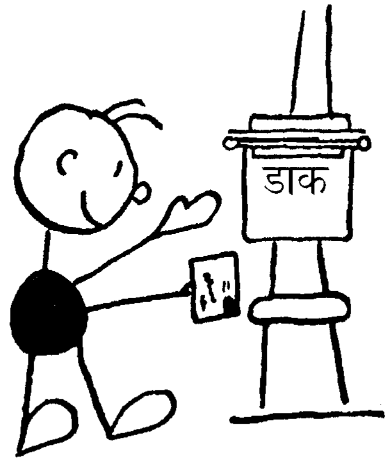

तुमको सिर्फ इतना ही करना होगा कि तुम उस पर टिकट लगाकर लेटर बक्स में डाल दो। यह पत्र तुम्हारे दोस्त को बहुत जल्दी मिल जाएगा।

लेकिन यह पत्र तुम्हारे दोस्त के पास अपने-आप नहीं पहुँच जाएगा।

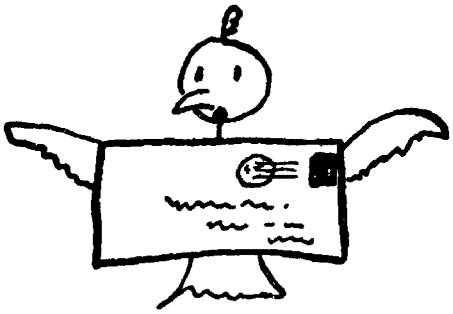

इस पत्र को तुम्हारे दोस्त तक पहुँचाने के लिए कई लोगों को काम करना पड़ेगा। एक आदमी पत्र को लेटर-बक्स से निकालकर डाकखाने ले जाएगा। वहाँ कुछ और आदमी और औरतें तुम्हारे दोस्त का पता देखकर पत्र को उस थैले में रख देंगे, जो उस जगह जाएगा जहाँ तुम्हारा दोस्त रहता है। यह थैला कुछ और लोग ले जाकर रेलगाड़ी में, या जहाज़ में, या हवाई जहाज़ में रख देंगे और तुम्हारा पत्र एक दूसरे डाकखाने तक पहुँच जाएगा।

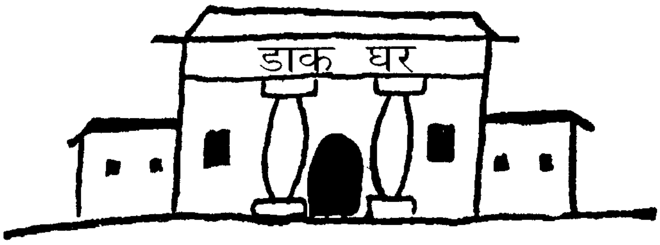

वहाँ दूसरे आदमी और औरतें थैले को खोलकर पत्र एक डाकिये को दे देंगे जो इस पत्र को तुम्हारे दोस्त के घर तक पहुँचा देगा। मुमकिन है कि केवल तुम्हारे उस पत्र को तुम्हारे दोस्त तक पहुँचाने के लिए सौ से भी ज़्यादा लोगों का हाथ लगे।

क्या तुम जानते हो कि जो लोग ये सब काम करते हैं, उनको पैसे कौन देता है?

हम सब देते हैं।

हम कर (टैक्स) देते हैं।

टैक्स उस पैसे को कहते हैं,
जो हम सरकार को इसलिए देते है कि
सरकार उन लोगों को

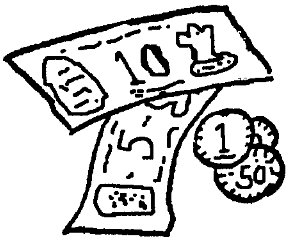

पैसे दे सके,
जो हम सब के लिए काम करते हैं।

अब हम तुमको कुछ ऐसे लोगों के बारे में बताएँगे जो हम सबके लिए काम करते हैं और जिनको इन करों में से वेतन दिया जाता है।

आग बुझाने वाले

आग बुझाने वाले हम सबके लिए काम करते हैं। वे यह नहीं कह सकते कि ''हम दुर्गा का मकान नहीं बचाएँगे या हम गिरधर की दुकान की आग नहीं बुझाएँगे क्योंकि हमको ये लोग अच्छे नहीं लगते।'' हमारे या तुम्हारे मकान या किसी की भी जगह में अगर आग लग जाए तो वे उसे बुझाने ज़रूर आएँगे।

पुलिस वाले

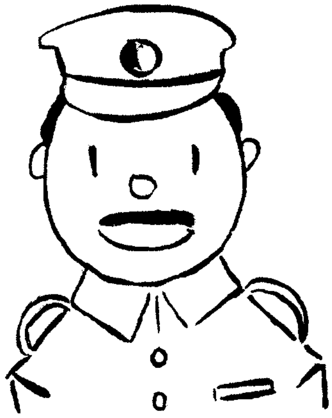

पुलिस वाले भी हम सबके लिए काम करते हैं। वे हमारी जान की और हमारे माल की उन लोगों से रक्षा करते हैं, जो हमको हानि पहुँचाने की कोशिश करते हैं।

पुलिस वालों को इसलिए वेतन दिया जाता है कि वे इस बात को देखें कि सब लोग नियमों का पालन करें।

कुछ लोग नहीं, सब लोग!

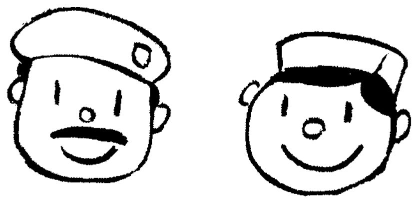

फौजियों को भी इन्हीं टैक्सों में से तनख़्वाह दी जाती है कि यदि कोई दूसरा देश हमें हानि पहुँचाने की कोशिश करे, तो वे हमारी रक्षा करें।

इसी प्रकार कई इंस्पैक्टर होते हैं, जो कई तरह से हमारी रक्षा करते हैं, जिनका हमें ध्यान भी नहीं आता।

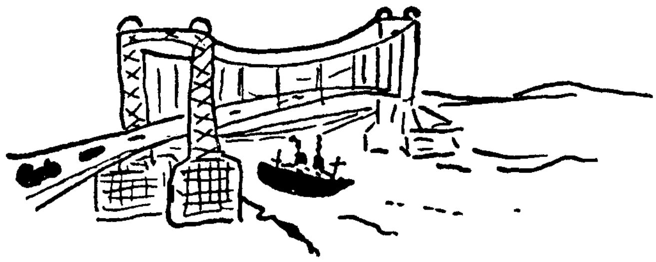

कई इंस्पैक्टर यह देखते हैं कि पुल ठीक से बनाए जाएँ ताकि वे गिर न पड़ें।

कुछ इंस्पैक्टर सब घरों और इमारतों की देख-रेख करते हैं कि घर इतने मज़बूत बनाए जाएँ कि वे हमारे ऊपर न गिर पड़ें।

कुछ इंस्पैक्टर यह देखते हैं कि बाज़ार में जो खाने-पीने की चीज़े मिलती हैं, वे साफ-सुथरी हों।

इसी प्रकार के हज़ारों और इंस्पैक्टर इस बात का ध्यान रखते हैं कि दूसरे लोगों की लापरवाही के कारण हमारी जान संकट में न पड़ जाए।

इन इंस्पैक्टरों को भी टैक्सों से तनख़्वाह मिलती है।

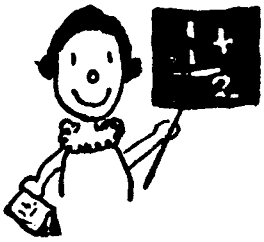

शिक्षक

और

अस्पतालों की गाड़ियाँ

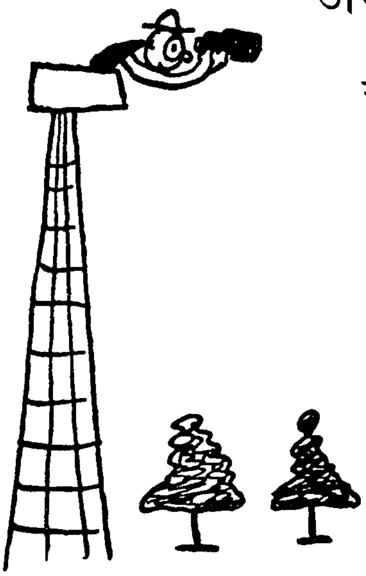

चलाने वाले ड्राइवर,

नर्सें,

जंगल के रखवाले,

जो यह ध्यान रखते हैं कि

जंगल में कहीं आग तो नहीं लग रही है,

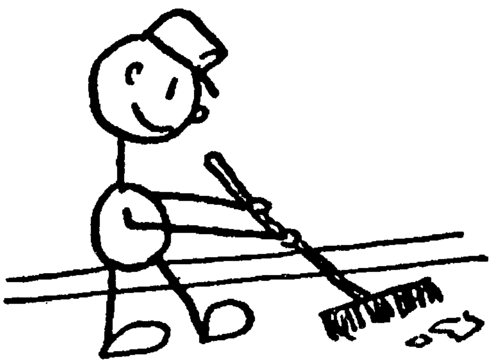

कचरा जमा करने वाले,

सड़क साफ करने वाले, वे

आदमी और औरतें, जो

किसानों को, मछुआरों को और मिलों के मज़दूरों को सहायता और सलाह देते हैं,

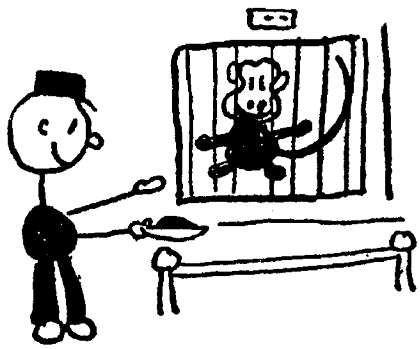

डाकिए,

चिड़ियाघर की देख-रेख करने वाले, और वे लोग जो हमारे लिए बाग-बगीचे बनाते हैं और उनकी देखभाल करते हैं –

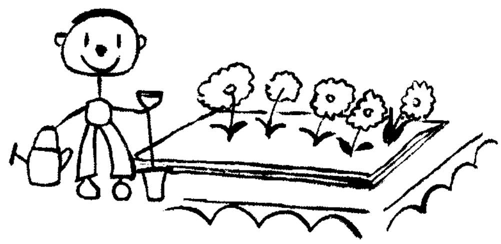

ये सब लोग, और

इनकी तरह के बहुत से और लोग, हम सब के लिए काम करते हैं और इन सबको उस पैसे से तनख़्वाह दी जाती है, जो हम सरकार को टैक्स के रूप में देते हैं।

हाँ, मैंने कहा था कि जो लोग हमारे बाग-बगीचों की देखभाल करते हैं, वे हम सबके लिए काम करते हैं।

छोटे-से-छोटे से लेकर बड़े-से-बड़े बाग-बगीचे सभी, सचमुच हम सभी के हैं, ताकि हम वहाँ जाकर अपना मन बहला सकें और आनन्द उठा सकें।

तुमने इन बाग-बगीचों में ऐसी तख़्ती लगी देखी होगी। क्या तुम जानते हो कि यह तख़्ती क्यों लगाई जाती है?

इस प्रकार की तख़्तियाँ इसलिए नहीं लगाई जातीं कि

तुमको या किसी एक आदमी को वहाँ चलने से रोका जाए।

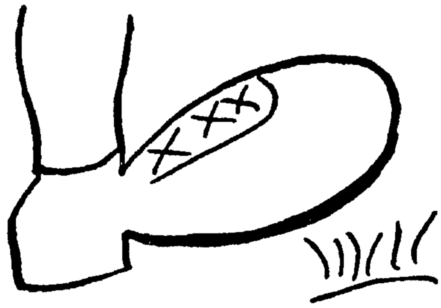

ये तख़्तियाँ इसलिए लगाई जाती हैं कि बाग हम सबके हैं और हम उनका मज़ा तभी ले सकते हैं जब उनमें घास और फूल उगने दिए जाएँ।

सिर्फ एक आदमी के चलने से घास शायद खराब नहीं हो जाएगी, लेकिन यदि एक आदमी को घास पर चलने की इजाज़त दी जाए, तो सबको इसकी इजाज़त होनी चाहिए। इस प्रकार जल्दी ही सारी घास कुचल कर ख़राब हो जाएगी। यह घास हम सबकी साँझी है।

हम सब सरकार को टैक्स देते हैं।

कभी-कभी तो हमें मालूम भी नहीं होता कि हम टैक्स दे रहे हैं।

जब तुम क्रिकेट का बल्ला, कपड़े या घड़ी खरीदते हो, तो जो दाम तुम देते हो, उसका कुछ हिस्सा टैक्स के रूप में सरकार के पास चला जाता है।

हमारे पास जितना ज़्यादा पैसा होता है या
हम जितना ज़्यादा पैसा कमाते हैं, उतना ही
ज़्यादा टैक्स हमें देना पड़ता है।

हमारे देश में कुछ लोगों के पास दूसरों से ज़्यादा धन है, लेकिन ऐसा कोई कानून नहीं है, जो हमें और अधिक धन कमाने की कोशिश करने से रोके।

कुछ स्वार्थी लोग ऐसे होते हैं, जिनके पास बहुत धन होता है, पर वे दूसरों की सहायता करने की कोशिश नहीं करते।

और कुछ स्वार्थी लोग ऐसे होते हैं, जिनके पास अधिक धन नहीं होता और

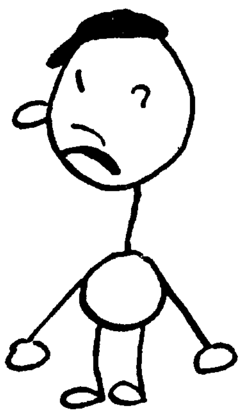

वे दूसरों का धन छीनकर उस पर अपना कब्ज़ा जमा लेना चाहते हैं। अगर कोई उनका ही धन छीनना चाहे, तो उनको बहुत बुरा लगेगा।

दोनों ही प्रकार के लोग स्वार्थी होते हैं और दोनों ही प्रकार के लोग बुरे नागरिक होते हैं।

हमारे देश में कई कमियाँ हैं और हमारे देश के शासन में भी कई कमियाँ हैं, लेकिन

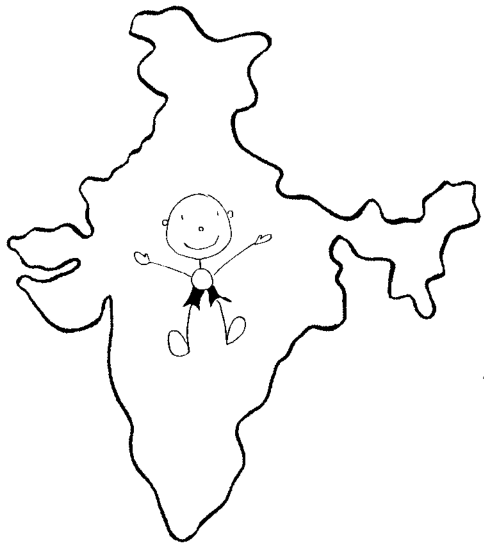

फिर भी हममें से अधिकतर लोग इसी देश में रहना चाहते हैं और हम सब मिलकर इस देश को और अच्छा बना सकते हैं।

किसी भी दूसरे देश का शासन हमारे देश से अच्छा नहीं है।

हमारे देश में हर आदमी और औरत को समान अधिकार है कि वह कानून बनाने में सहायता करे और इस प्रकार देश के शासन में भाग ले।

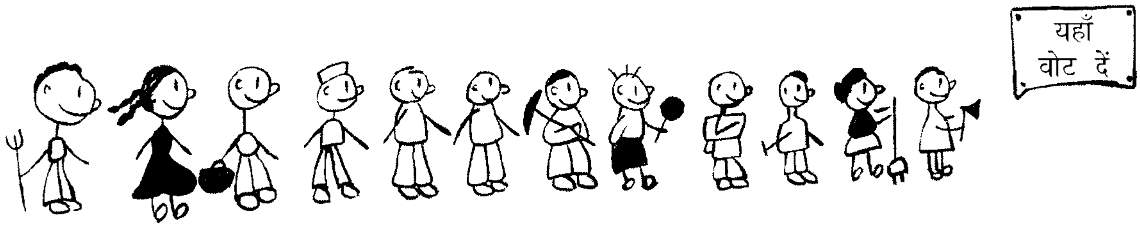

हमारे देश में हर आदमी और औरत को अधिकार है कि वह ईमानदारी से जितना धन कमा सके कमाए, और सबको एक ही कानून का पालन करना पड़ता है।

अगर हम सब लोग स्वार्थी न बनें और जहाँ

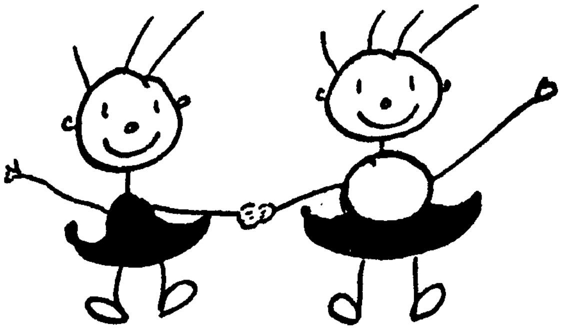

तक हो सके एक-दूसरे
की सहायता करने को
तैयार रहें, तो यही
सही बात होगी

और हम सबका
जीवन भी
अब से
ज़्यादा सुखी
हो जाएगा।

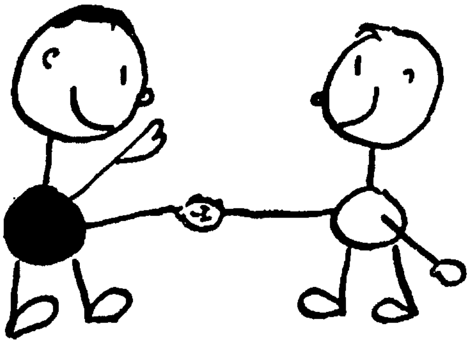

हमारे देश के आधुनिक इतिहास में एक आदमी ऐसा हुआ है, जिसने देश के लिए सबसे ज़्यादा काम किया है।

वह बहुत दयालु और स्वार्थहीन मनुष्य था। उसने इस बात की कोशिश की कि हमारे देश में सबका जीवन सुखी बन सके और सब लोग अच्छी तरह से, मिल-जुलकर रहें।

उस व्यक्ति ने हमें आज़ादी दिलाई और समाज में रहने का सही तरीका सिखाया।

उस आदमी का नाम था

महात्मा गांधी

पृथ्वी पर स्वर्ग

ऐसे स्वर्ग में... न कोई कंगाल होगा न भिखारी,
न ऊँच न नीच, न लखपति न अधभूखा कर्मचारी,
न मादक पेय, न नशीली दवाइयाँ।
वहाँ जो सम्मान पुरुषों को प्राप्त होगा
वही स्त्रियों को भी दिया जाएगा...
वहाँ छूआछूत का नामोनिशान नहीं होगा और
सभी धर्मों को समान आदर की दृष्टि से देखा जाएगा।
वहाँ सभी लोग रोटी कमाने के लिए प्रसन्नतापूर्वक और
स्वेच्छा से श्रम करने में गौरव का अनुभव करेंगे।

—*महात्मा गांधी*

सारे भारत में केवल
तुम्हीं नहीं हो।

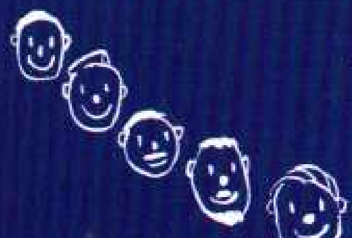

हमारे देश में
सौ करोड़ से ज़्यादा
लोग रहते हैं जो
कई प्रकार के काम
करते हैं।

क्या होगा अगर हम सब मनमानी करने लगें ?

अपने देश में रहने का सही तरीका क्या है ?

अरविन्द कुमार

मूल्य 50 रुपये

ISBN-10: 81-8452-009-3
ISBN-13: 978-81-8452-009-5